Totalbhakti.com

Jh vEc th dh vkjrh

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी।।
जय.मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नैना चन्द्रवदन नीको।। जय.
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त–पुश्प गल माला कण्ठनपर साजै।। जय.
केहरि वाहन राजत खड्ग खपर धारी।
सुर–नर–मुनि–जन सेवत तिनके दुखहारी।। जय.
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति।।
जय.शुम्भ निशुम्भ विदारे महिशासुर–घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशदिन मदमाती।। जय.
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे सुर भयहीन करे।। जय.
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमलारानी।
आगम–निगम–बखानी, तुम शिव पटरानी।। जय.
चौसठ योगिनी गावत,नृत्य करत भैरु।
बाजत ताल मृदगां अरु बाजत डमरु।। जय.
तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तनकी दुख हरता सुख सम्पति करता।। जय.
भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर–नारी।। जय.
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्री मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योती।। जय.
श्री अम्बेजी की आरति जो कोई नर गावै।.

www.Totalbhakti.com